डी.एल.एड. छात्रों की सृजनात्मकता का अध्ययन और उनके द्वारा बनाई गई शिक्षण सामग्री पर सृजनात्मकता के प्रभाव का अध्ययन

डॉ. सविता शर्मा
शिक्षा विभाग, विक्टोरिया कॉलेज ऑफ एजूकेशन, भोपाल (मध्य प्रदेश) भारत

सांराश
प्रस्तुत शोधपत्र में डी.एल.एड. छात्रों की सृजनात्मकता का अध्ययन और उनके द्वारा बनाई गई शिक्षण सामग्री पर सृजनात्मकता के प्रभाव का अध्ययन" किया गया। इस क्रियात्मक अनुसन्धान में विक्टोरिया कालेज आफ एजूकेशन के डी.एल.एड. संकाय के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों को जो जनसंख्या के रूप में लिया गया सभी विद्यार्थियों पर सृजनात्मकता परिक्षण किया गया जिसके मूल्यांकन के आधार पर विद्यार्थियों को सृजनात्मक एवं असृजनात्मकता समूह में बाँटा गया। तत्पश्चात उनमें से 20 विद्यार्थियों ने सृजनात्मक समूह तथा 20 असृजनात्मक समूह को न्यादर्श के रूप में लिया गया। जिन पर यह शोध कार्य किया गया। अर्थात् हमारा कुल न्यादर्श 40 विद्यार्थियों का है। आंकड़ों के सकलन के लिए उपकरण के रूप में सृजनात्मकता एवं शिक्षण सामग्री के लिए स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य से हमें यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि कि यदि विद्यार्थियों की सृजनशीलता के गुण में अन्तर होगा तो उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता में भी अन्तर होगा तथा जिस विद्यार्थी में सृजनशिलता का स्तर उच्च होगा उसकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता का स्तर भी उच्च होगा क्योंकि दोनों में धनात्मक सहसम्बन्ध है इसलिए सृजनात्मकता का प्रभाव शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता पर पड़ता है।

मुख्यबिन्दु :– सृजनात्मकता, शिक्षण सामग्री, डी.एल.एड.

I प्रस्तावना

मानव स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी है। यदि हम मानव विकास पर दृष्टिपात करें तब हम पातें है कि वह निरन्तर शोध करके अपने जीवन स्तर में सुधार करता आ रहा है। आधुनिक युग वैज्ञानिक युग है। आज रोज नये विकास हो रहे हैं। यदि वातावरण इस युग के विकास के अनुकूल हो तो व्यक्ति की क्षमता का मौलिक विकास होता है। सृजनात्मकता जो कि मानव प्रकृति में विद्यमान सार्वभौम प्रवृत्ति है विकास का सबसे अहम माध्यम है। सृजनशीलता के गुण का विकास न होने से हजारों लाखों प्रतिभायें अविकसित रह जाती है इससे राष्ट्र विकास में बाधा उत्पन्न होती है। जिस व्यक्ति में सृजनात्मकता का गुण निहित होता है उसका दिमाग चिन्तनशील होता है। यह गुण उसे नये–नये अविष्कारों के लिये प्रेरित करता है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में सृजनात्मकता एक महत्वपूर्ण पक्ष होता जा रहा है। इसलिये मेरे मन मै इस विषय पर शोध करने की इच्छा जागृत हुई।

(क) सृजनात्मकता–

"सृजनात्मकता– शब्द अंग्रेजी के क्रियेटिवीटि के पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता है। इसके समानान्तर विधायकता, उत्पादन शब्दों का प्रयोग होता है। इसके समानान्तर विधायकता, उत्पादन शब्दों का प्रयोग होता है। उत्पादकता में प्रॉडक्टीविटी का बोध होता है जो किसी वस्तु के उत्पादन का आभास कराता है। विधायकता में एकत्रीकरण का बोध होता है। एक और शब्द है– खोज, इसे डिस्कवरी के संदर्भ में प्रयुक्त किया जाता है– खोज, इसे डिस्कवरी के संदर्भ में प्रयुक्त किया जाता है। ये सभी शब्द सर्जनात्मकता के इर्द–गिर्द घूमते हैं, पर उस आशय को पूरा नहीं करते सर्जनात्मकता के बिलकुल समानान्तर सृजनात्मक शब्द भी है। सृजन में शून्य का भाव है और सर्जन में विद्यमान में नवीनता की मोलिकता की सृष्टि करनी पड़ती है। डाक्टर कामिल वुल्के ने क्रियेटिव शब्द के समानान्तर अर्थ सर्जनात्मक, रचनात्मक, सर्जक बताये हैं। भारत सरकार के तकनीकी कोश ने क्रियेटिविटी को सर्जनशीलता कहा है। डाक्टर रघुवीर ने क्रियेट के अर्थ सर्जन, उत्पन्न करना, सर्जित करना बनाना कहा है।

"सृजनात्मकता कलाकारों के जीवन में अधिक व्यापक रूप में पाई जाती है। जिस प्रकार सूर्य एक है परन्तु अपनी सभी किरणों में अपना प्रकाश व तेज वितरित करता है, सभी में अपना अंश, प्रभाव व ताप छोड़ता है उसी प्रकार ईश्वर के अंश के रूप में सभी प्राणियों में सृजनात्मकता विद्यमान रहती है। यह मानव प्रकृति में विद्यमान सार्वभौम प्रवृत्ति है। परन्तु इस प्रतिभा को विकसित या प्रस्फुटित होने का परिदृश बिरले व्यक्तियें को ही मिल पाता है। भारत के छात्रों में निहित सृजनशीलता के गुण का विकासन होने से हजारों लाखों प्रतिभायें अविकसित रह जाती है, उनसे राष्ट्र की हानि होती है। राष्ट्र का यह दायित्व होता है कि वह इन्हें विकास के समुचित अवसर प्रदान करे क्योंकि सम्पूर्ण जनसंख्या भी राष्ट्र को उन्नति के शिखर पर नहीं पहुँचा सकती जहाँ कि चार सृजनशील व्यक्ति पहुँचा सकते है। अतः ऐसे व्यक्तियों को ढूंढ कर उनकी प्रतिभा का लाभ सम्पूर्ण देश को देना राष्ट्र कर्तव्य है।

(ख) परिभाषा –

मैडनिक के शब्दों में :– "सृजनात्मक चिन्तन में साहचर्य के तत्वों का मिश्रण रहता है, जो विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु संयोगशील होते हैं या अन्य किसी रूप में लाभदायक होते है। नवीन संयोग के विचार जितने कम होंगे सृजनात्मकता की संभावना उतनी ही अधिक होगी"।

(ग) डी.एल.एड. – राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा 2005 एवं राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् द्वारा निर्धारित मापदण्डों के प्ररिप्रेक्ष्य में शिक्षक शिक्षा के अन्तर्गत डिप्लोमा इन एज्यूकेशन (डी.एल.एड.) के पाठ्यक्रम के माध्यम से एसे

समर्पित शिक्षक तैयार करने का लक्ष्य है, जो अपनी व्यावसायिक दक्षताओं के साथ–साथ सतत् रूप से सीखने की अभिरूचि भी विकसित कर सकें। यह पाठ्यक्रम शिक्षक का विद्यार्थी केन्द्रित एवं शिक्षण विधियों को विद्यार्थियों के सीखने की क्षमता वृद्धि को सुसाध्य बनाने की दिशा में प्रेरक भूमिका अदा कर सकेगा। प्रचलित शिक्षण विधियों की तुलना में उन विभिन्न तरीकों पर अधिक बल दिया जाना चाहिये, जिनसे विद्यार्थी अधिक रूचि के साथ सीखते हैं। सीखने की पृथक्–पृथक् क्षमताओं एवं पृथक्–पृथक् पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के लिये एक समान शिक्षण विधियाँ उपयुक्त नहीं हो सकती। अब शिक्षक की भूमिका विविध प्रकारों से ज्ञान के विकास करने वाले की होगी, जिसके माध्यम से वह शिक्षार्थियों को उनके शैक्षणिक लक्ष्यों की पूर्ति में सहायता कर सके। इस दृष्टि से ज्ञान वास्तविक अनुभवों, अवलोकनों एवं निष्कर्षों के अनुभवों पर आधारित हो अर्थात् शिक्षा की दृष्टि से सजग प्रयास किये जाने की अपेक्षा की गयी है।

(घ) शिक्षण सामग्री –

वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिक्षण सामग्री साधनों का महत्वपूर्ण स्थान है। भाषा शिक्षण में तो सहायक सामग्री का विशेष स्थान है। अन्य विषयों की भॉति हिन्दी शिक्षण में श्रव्य–दृश्य सामग्री अधिक उपयोगी होती है। बालक को मात्र वर्णन या विवेचन से दी जाने वाली शिक्षा सफल नहीं होती जितनी सहायक सामग्री के माध्यम से होती है। यह भी सिद्ध हो चुका है कि जिस सीमा तक बालक/प्रौड की ज्ञानेन्द्रियों को क्रियाशील रखा जाएगा उतना ही अधिक प्रभाव पड़ेगा। इसी कारण से आज शिक्षण विधि को प्रभावी तथा सजीव बनाने के लिए श्रव्य–दृश्य सामग्री की आवश्यकता का अनुभव तेजी सके किया जाने लगा है। प्रसिद्ध दार्शनिक व शिक्षाशास्त्रियों जैसे– रूसों, पेस्तालाजी, कोमेनियस आदि ने शिक्षा प्रक्रिया में सहायक सानग्री को अधिक उपयोगी बताया है। रूसो तथा कोमेनियस ने कोरे शाब्दिक ज्ञान को महत्वहीन बताया तथा प्रत्यक्ष अनुभव को महत्व दिया। फ्रॉबेल तथा मान्टेसरी ने तो श्रव्य–दृश्य साधनों के प्रयोग को अपनी नवीन शिक्षण पद्धतियों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया था।

रूसो ने "प्रत्यक्ष अनुभव" के लिए दृश्य उपकरणों की आवश्यकता पर बल दिया उसने बताया कि दृश्य उपकरणों की सहायता से पाठ्य सामग्री को सरल तथा सरस बनाया जा सकता है, विषय को स्पष्ट किया जा सकता है। साथ ही विषय को रोचक शैली में बोधगम्य बनाया जा सकता है। शिक्षण सामग्री तीन प्रकार की होती है :

(i) **श्रव्य साधन** :– श्रव्य साधनों का सम्बन्ध कानों से है। इन उपकरणों में मुख्य रेडियों, ग्रामोफोन, टेपरिकार्डर, टेलीफोन आदि है।

(ii) **दृश्य साधन** :– ये वे उपकरण हे जिन्हें छात्र देख सकते हैं। इनका सम्बन्ध नेत्रों से है। इनमें श्यामपट, चित्र, मॉडल, वस्तु, रेखाचित्र, चार्ट, मूक चित्र, स्लाइड, चित्र विस्तारक यन्त्र आदि आते हैं।

(iii) **श्रव्य–दृश्य साधन** :– इन उपकरणों का सम्बन्ध कानों एवं ऑखों दोनो से है। इनमें श्रवणेन्द्रिय तथा दृश्येन्द्रिय दोनो एक साथ प्रयोग करके छात्र ज्ञान प्राप्त करते हैं। ये उपकरण मनोवैज्ञानिक दृष्टि से छात्रों के लिए अधिक उपयोगी एवं ज्ञानदायक है। इनका प्रभाव छात्रों पर अधिक पडता हे। इन साधनों में चलचित्र, टेलीविजन, नाटक आदि आते हैं।

(च) समस्या कथन –

"डी.एल.एड. छात्रों की सृजनात्मकता का अध्ययन और उनके द्वारा बनाई गई शिक्षण सामग्री पर सृजनात्मकता के प्रभाव का अध्ययन"

II पूर्व में किए गए शोध

कुमार (1957) ने "किशोरों की सृजनात्मकता, बुद्धि समायोजन एवं मूल्यों के मध्य संबंधों का पी.एच.डी. हेतु आगरा विश्वविद्यालय में अध्ययन किया और यह निष्कर्ष निकाला। (अ) सृजनात्मकता एवं बुद्धि, सृजनात्मकता एवं समायोजन तथा सृजनात्मकता एवं मूल्यों के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं पाया गया। (ब) किशोरावस्था (13 से 18 वर्ष) में सृजनशीलता में वृद्धि पायी गयी। (स) परिपक्वता के समीप (लगभग 18 वर्ष) के किशोरों में वृद्धि स्तरों में वृद्धि का प्रभाव पाया गया।

केवव रिचार्ड एल. (1970) ने सृजनात्मकता एवं बुद्धि का संयुक्त विश्लेषण किया उन्होंने लार्ज थार्नडाइक परीक्षण एवं पाँच चुने हुए सृजनात्मकता परीक्षण 447 माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों पर प्रयोग किया जिसके द्वारा तीन तत्वों का पता चला– मौखिक बुद्धि, तार्किक शक्ति, एवं सृजनात्मकता। द्वितीय श्रेणी तत्व जो मौखिक तत्व की विभिन्नता के आधार पर 77:, तार्किक तत्व के आधार 89: एवं सृजनात्मकता तत्व के आधार पर 48: पाया गया।

गैंग एवं मेहल (1969) ने विशेष क्षमतीओं एवं बुद्धि के संबंधों का अध्ययन किया उन्होंने निष्कर्ष निकला निकला कि गणित के विद्यार्थियों ने सामान्य एवं अवर्गीकृत विद्यार्थियों ने सामान्य एवं अवर्गीकृत विद्यार्थियों एवं संगीत के विद्यार्थियों की अपेक्षा सामान्य बुद्धि स्तर में अधिक अंक अर्जित किए। संगीत के विद्यार्थियों ने प्रस्तुतीकरण क्षमता में मध्यम स्थान ग्रहण किया जबकि उनका प्रस्तुतीकरण रूझान अवर्गीकृत छात्रों के समान रहा।

III समस्या कथन, उद्देश्य तथा परिकल्पनाएं

(क) अध्ययन के उद्देश्य–

(i) सृजनात्मकता एवं असृजनात्मक समूह की पहचान करना।

(ii) सृजनात्मकता एवं असृजनात्मक समूह के विद्यार्थियों की शिक्षण सामग्री का तुलनात्मक अध्ययन करना।

(iii) सृजनात्मकता और शिक्षण सामग्री के मध्य प्रभाव का अध्ययन करना।

(ख) अध्ययन की परिकल्पनाएँ–

(i) यदि विद्यार्थियों के सृजनशीलता के गुण में अन्तर होगा तो उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता में भी अन्तर होगा।

(ii) यदि विद्यार्थी में सृजनशीलता का स्तर उच्च होगा तो उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता का स्तर भी उच्च होगा।

(iii) यदि विद्यार्थियों सृजनशीलता को बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाये तो उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता भी बढ़ेगी।

IV न्यादर्श शोधविधि तथा उपकरण

(क) अध्ययन का न्यादर्श–

इस कियात्मक अनुसन्धान में विक्टोरिया कालेज आफ एजूकेशन के डि.एड. संकाय के प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों को जो जनसंख्या के रूप में लिया गया सभी विद्यार्थियों पर सृजनात्मकता परिक्षण किया गया जिसके मूल्यांकन के आधार पर विद्यार्थियों को सृजनात्मक एवं असृजनात्मकता समूह में बॉटा गया। तत्पश्चात उनमें से 20 विद्यार्थियों ने सृजनात्मक समूह तथा 20 असृजनात्मक समूह को न्यादर्श के रूप में लिया गया। जिन पर यह शोध कार्य किया गया। अर्थात् हमारा कुल न्यादर्श 40 विद्यार्थियों का है।

विद्यार्थी (डी.एल.एड. प्रथम एवं द्वितीय)

सृजनात्मकता परिक्षण के आधार पर 40 विद्यार्थी			
सृजनात्मकसमूह 20 विद्यार्थी		असृजनात्मक समूह 20 विद्यार्थी	
प्रथम वर्ष 10 विद्यार्थी	द्वितीय वर्ष 10 विद्यार्थी	प्रथम वर्ष 10 विद्यार्थी	द्वितीय वर्ष 10 विद्यार्थी

(ख) शोध विधि–

इस अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

(i) शोध कार्य में प्रयुक्त्व चर

- स्वतंत्र चर – सृजनात्मकता
- आश्रित चर – शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता

(ii) शोध कार्य में प्रयुक्त साख्यिकी

शोध कार्य में आंकडों के संकलन के पश्चात उनका परिणाम निकालने के लिए निम्न सांख्यिकी सूत्रों का प्रयोग किया गया।

- मध्यमान
- मानक विचलन
- टी टेस्ट
- सह–सम्बन्ध

(iii) शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण

इस क्रियात्मक अनुसुन्धान कार्य के लिए निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

- सृजनात्मकता का स्वनिर्मित परिक्षण
- शिक्षण सामग्री का स्वनिर्मित परिक्षण

V विश्लेषण तथा निष्कर्ष

(क) विश्लेषण परिकल्पना :–1

तालिका क्रमांक :– 1

यदि विद्यार्थियों के सृजनशीलता के गुण में अन्तर होगा तो उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता संम्बधित 'टी' परिणाम

समूह	विद्यार्थी N	मध्यमान M	मानक विचलन SD	t मान
सृजनात्मक	$N_1 = 20$	$M_1 = 35.2$	$\sigma = 3.136$	3.011
असृजनात्मक	$N_2 = 20$	$M_2 = 15.15$	$\sigma = 2.615$	

सारणी क्रमांक :– 1 से निर्देश होता है कि सृजनात्मक समूह का मध्यमान 35.2 तथा असृजनात्मक समूह का मध्यमान 15.15 पाया गया तथा सृजनात्मक समूह का मानक विचलन 3.136 तथा असृजनात्मक समूह का मानक विचलन 2.887 पाया गया। स्वतन्त्रता की कोटि 38 पर 0.01 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर न्यूनतम मान 2.59 है और 0.05 प्रतिशत विश्वास के स्तर पर न्यूनतम मान 1.96 है। गणना के बाद प्राप्त मान 2.59 $\leq$ 3.011 तालिका के मान से ज्यादा है। अतः हमारी शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है तथा सृजनात्मक और असृजनात्मक समूह की शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता में सार्थक अन्तर पाया गया। अतः उपरोक्त गणना से यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि विद्यार्थियों की सृजनशीलता के गुण में अन्तर होगा तो उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता में भी अन्तर होगा अर्थात् जिस विद्यार्थी में अधिक सृजनशीलता होती है उसकी शिक्षण सामग्री के गुणवत्ता भी अधिक होगी तथा जिसमें कम सृजनशीलता होती है। उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता भी कम होगी।

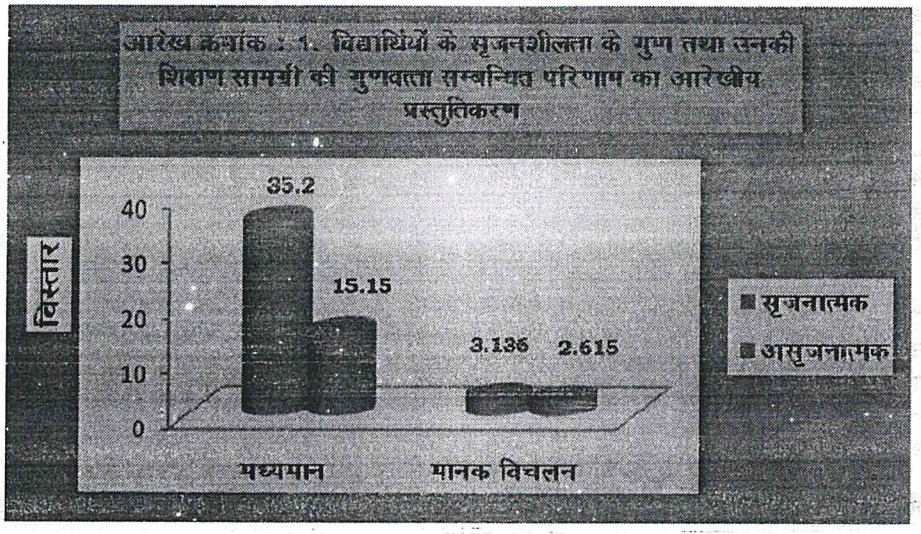

(ख) निष्कर्ष परिकल्पना–1

उपरोक्त गणना से यह निष्कर्ष निकलता है कि यदि विद्यार्थियों की सृजनशीलता के गुण में अन्तर होगा तो उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता में भी अन्तर होगा

(ग) विश्लेषण परिकल्पना :–2

तालिका क्रमांक :– 2

यदि विद्यार्थी में सृजनशीलता का स्तर उच्च होगा तो उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता संम्बधित 'टी' परिणाम

चर	समूह	मध्यमान $\bar{x}$	मध्यमान $\bar{y}$	$\sum x^2$	$\sum y^2$	$\sum xy$	गुणांक
सृजनात्मक एवं शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता	विद्यार्थी	35.55	35.20	99	199.2	66.8	0.475

सारणी क्रमांक :– 2 से ज्ञात होता है कि विद्यार्थी की सृजनात्मता का मध्यमान 35.55 तथा शिक्षण सामग्र की गुणवत्ता का मध्यमान 35.2 पाया गया तथा दोनो चरो का सहसम्बन्ध 0.475 पाया गया जो धनात्मक सहसम्बन्ध दर्शाता है अतः विद्यार्थीयों की सृजनात्मकता और शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध है। अतः हमारी परिकल्पना" यदि विद्यार्थी में सृजनशीलता का स्तर उच्च होगा तो उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता का स्तर भी उच्च होगा।" स्वीकृत होती है। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि जिस विद्यार्थी में सृजनशिलता का स्तर उच्च होगा उसकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता का स्तर भी उच्च होगा क्योंकि दोनों में धनात्मक सहसम्बन्ध है इसलिए सृजनात्मकता का प्रभाव शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता पर पड़ता है।

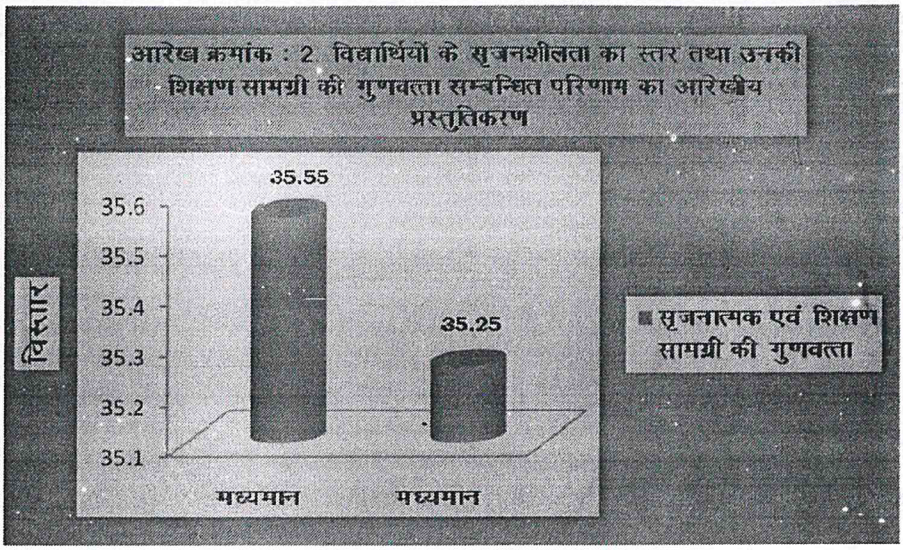

(घ) निष्कर्ष परिकल्पना–2

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि जिस विद्यार्थी में सृजनशिलता का स्तर उच्च होगा उसकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता का स्तर भी उच्च होगा क्योंकि दोनों में धनात्मक सहसम्बन्ध है इसलिए सृजनात्मकता का प्रभाव शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता पर पड़ता है।

(च) विश्लेषण परिकल्पना – 3

तालिका क्रमांक :– 3

यदि विद्यार्थियों सृजनशीलता को बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाये तो उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता संम्बधित 'टी' परिणाम

समूह	विद्यार्थी N	मध्यमान M	मानक विचलन SD	t मान
प्रशिक्षीत	$N_1 = 20$	$M_1 = 36.246$	$\sigma = 3.567$	5.369
अप्रशिक्षीत	$N_2 = 20$	$M_2 = 13.456$	$\sigma = 1.987$	

उपरोक्त दोनो परिकल्पनाओं से यह सिद्ध होता हे कि विद्यार्थी की सृजनात्मकता का उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पडता है तथा विद्यार्थियों की सृजनशीलता में अन्तर होने से उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता में भी अन्तर होता है। इसलिए परिकल्पना –3 का सत्यापन तथा विश्लेषण दो चरणों में पूरा किया गया। प्रथम चरण में हमने विद्यार्थियों की सृजनात्मकता को ध्यान दिये बिना सामान्य तरिके से उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता का मूल्यांकन किया गया उन्हें उनकी सृजनात्मकता को बढ़ाने के लिए कोई प्रयास नहीं किये गये तथा इस मूल्यांकन से आंकड़ों का संकलन किया गया तथा द्वितीय चरण में हमने पहले विद्यार्थी को उनकी सृजनशीलता को बढ़ाने के लिए प्रेरित किया उनकी रूचि के अनुसार उनको शिक्षण दिया। शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए कर्यशाला तथा प्रयोगिक कक्षाओं का आयोजन किया उनकी सृजनशीलता को बढ़ाने के लिए अनेक प्रयास किये गये तत्पश्चात उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता का मुल्यांकन किया गया तथा आंकड़ों का संकलन किया गया। जिसके अनुसार ज का मान टेबल के मान से ज्यादा है अतः प्रशिक्षीत अप्रशिक्षीत विद्यार्थियों की शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता में सार्थक अन्तर है जिससे यह सिद्ध होता है कि यदि विद्यार्थियों सृजनशीलता को बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाये तो उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता भी बढ़ेगी।

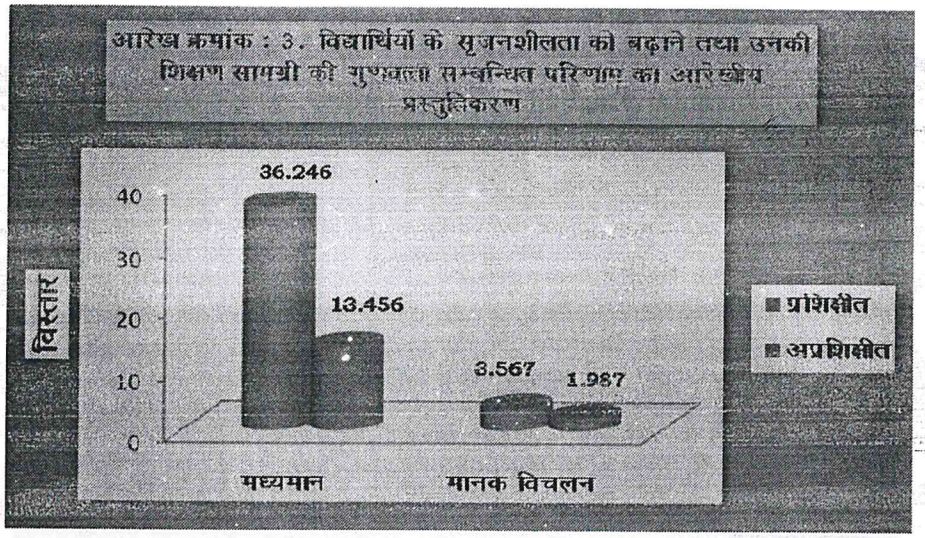

(छ) निष्कर्ष परिकल्पना–3

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यदि विद्यार्थियों सृजनशीलता को बढाने के लिए प्रेरित किया जाये तो उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता भी बढ़ेगी।

VI परिणाम

(क) यदि विद्यार्थियों की सृजनशीलता में अन्तर होगा तो उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता में भी अन्तर होगा।

(ख) यदि विद्यार्थी में सृजनशीलता का स्वर उच्च होगा तो उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता का स्तर भी उच्च होता है।

(ग)यदि विद्यार्थियों की सृजनशीलता को बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाये तो उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता भी बढ़ती है।

(घ) सृजनात्मकता व असृजनात्मक समूह के विद्यार्थियों की शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता में अन्तर होता है।

(च) विद्यार्थियों की सृजनात्मकता एवं उनकी शिक्षण सामग्री की गुणवत्ता के मध्य उच्च स्तर का धनात्मक सहसम्बन्ध होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] अग्रवाल, संध्या (2008) **"शिक्षा मनोविज्ञान"** अनुप्रकाशन जयपुर।

[2] गुड बी.सी. (1973) **"डिक्शनरी ऑफ एजूकेशन"** नेग्रा हिट बुक कै. न्यूयार्क।

[3] गुप्ता. एच.पी. (2005) **"सांख्यिकीय विधि"** शारदा पुस्तक भवन इलाहाबद।

[4] नरूला, संजय (2007) **"रिसर्च मैथडोलाजी** "स्वरूप एण्ड सन्स, नई दिल्ली।

[5] नेगी जे.एस. (2005) **"गणित शिक्षण"** विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।

[6] एन.सी.एफ. (2005) **"राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा"** एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली।